आठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन के पश्चात

कृपया सम्पर्क करें: chaudhar@oswego.edu

आज तक के सभी विश्व हिन्दी सम्मेलनों का प्रमुख उद्देश्य रहा हैं, हिन्दी को राष्ट्रसंघ की एक आधिकारिक भाषा बनाना, ताकि वह भारत की राजभाषा बन सके। न्यास ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया है। न्यास के उद्देश्य सम्मेलन के उद्देश्यों से अधिक व्यापक हैं, वे भारत तथा भारतवंशियों, के हित में हैं। *न्यास के कुछ अतिरिक्त उद्देश्य हैं, अमेरिका में हिन्दी शिक्षण को बढ़ावा देना तथा भारत के सर्वागीण विकास के लिए हिन्दी को सम्पूर्ण भाषा बनाना। न्यास के दो प्रकाशन, बाल हिन्दी जगत तथा विज्ञान प्रकाश इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हैं।*

आज के भारत में, शिक्षा के सभी स्तरों पर, अंग्रेज़ी माध्यम की श्रेष्ठ पाठशालायें हैं, वहां अंग्रेज़ी का साम्राज्य है। वहां हिन्दी बोलने पर विद्यार्थियों को दंड दिया जाता है। हिन्दी माध्यम, समाज के निर्बल वर्ग की विवशता बन गई है। *हमें इस स्थिति में बदलाव लाना होगा।* आज अंग्रेज़ी का अच्छा ज्ञान अनिवार्य है, इसे ध्यान में रख कर हमें, शिक्षा के सभी स्तरों पर, ऐसी पाठशालाएं प्रारम्भ करनी हैं, जहां शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो, साथ में अच्छी अंग्रेज़ी सीखने पर भी बल दिया जाय। इन पाठशालाओं के विद्यार्थी, हिन्दी तथा अंग्रेज़ी में समान रूप से दक्ष होंगे, वे अंग्रेज़ी द्वारा हिन्दी में आधुनिक ज्ञान लाने में सक्षम होंगे, और हिन्दी आधुनिक ज्ञान-सम्पन्न भाषा बनेगी।

प्रसन्नता का विषय है कि इस वर्ष, भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) की प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण शीर्ष 20 व्यक्तियों में दो ने हिन्दी माध्यम से परीक्षा दी थी। जैसा विदित है, हिन्दी माध्यम से कोचिंग देने वाली पाठशालाओं की संख्या नगण्य है। यदि हिन्दी के अच्छे कोचिंग स्कूल खोले जायें तो भारतीय प्रशासनिक सेवा तथा आई. आई. टी. जैसी प्रतियोगिताओं में हिन्दी माध्यम के अधिक विद्यार्थी सफल होंगे। मुझे विश्वास है कि हिन्दी तथा अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यार्थियों की होड़ में हिन्दी विद्यार्थी खरे उतरेंगे, वे हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों का मार्ग प्रशस्त करेंगे। इस प्रयोग में अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूलों को हिन्दी स्कूलों में परवर्तित कर देने की क्षमता है।

न्यास के प्रकाशनों में, विशेषत: न्यास समाचार में अमरीकी विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण की स्थिति के बारे में लिखा जाता रहा है। जैसा निम्न तालिका, तथा भाषाओं के वर्गीकरण से स्पष्ट होगा, भारत तथा विदेशों (अमेरिका) में, हिन्दी शिक्षण अत्यन्त दुर्बल अवस्था में है। इसे दूर करने के लिए हमें मिलकर काम करना है।

भाषा	विद्यार्थी संख्या	कालेजों की संख्या
जापानी	52,238	782
चीनी	34,135	543
अरबी	10,584	264
कोरियन	5,211	102
हिन्दी	1,430	51

अमेरिका में विदेशी भाषाओं को दो वर्गो में विभाजित किया जाता है। अधिक विद्यार्थी वाली भाषाओं को पहले वर्ग मे तथा कम पढ़ाई जाने वाली भाषाओं को दूसरे वर्ग में रखा जाता है। उन्हें (Less Commonly Taught Languages, L. C. T. L.) भाषा कहा जाता है। हिन्दी दूसरे वर्ग में आती है।

इस स्थिति से उबरने के लिए न्यास ने एक छोटा प्रयास किया है: रटगर्स विश्वविद्यालय को सन् 2001 में $8,000 का अनुदान देकर प्रारम्भिक हिन्दी कक्षाएं, तथा इस वर्ष $10,000 अनुदान देकर हिन्दी की माध्यमिक कक्षायें प्रारम्भ करवाई हैं। यदि हमें भारत सरकार, एवं अमेरिका के भारतीय धन कुबेरों का समर्थन मिले, तो वहां एक हिन्दीपीठ की स्थापना की जा सकती है। एक पीठ के लिए तीन मिलियन (तीस लाख) डालर चाहिए, अभी उत्तरी अमेरिका में हिन्दी का कोई पीठ नहीं है, कोरियन भाषा के 27 पीठ हैं। हमारा सुझाव है कि अमेरिका के पांच राज्यों, न्यू यार्क, न्यू जर्सी, कैलिफ़ोर्निया, टैक्साज़, तथा वाशिंगटन डी. सी. के विश्वविद्यालयों में 5 पीठों की स्थापना की जाय। इसमें भारत सरकार तथा अमेरिका के भारतवंशी समान भागीदारी करें। इन पीठों की आधार-शिला पर भारतीय अध्ययन केन्द्रों की स्थापना की जा सकती है।

हर्ष का विषय है कि भारत के गांवों के साधारण परिवारों में जन्मे, पले कुछ भारतवंशियों ने कई मिलियन डालरों का अनुदान दिया है। न्यास समाचार के अंकों में उनकी चर्चा की गई है: www.worldhindifoundation.org पर देखा जा सकता है। यहां केवल उनका नाम दिया जारहा है।

उत्तरप्रदेश के बुलन्दशहर ज़िले की अनूपशहर तहसील के गांव *बिचौला* में जन्में *श्री वीरेन्द्र सिंह ने सन् 2000 में बीस करोड़ रुपये तथा 42 एकड़ ज़मीन का दान देकर परदादा परदादी कन्या विद्यालय की स्थापना की।* पिछले सात वर्षो से उन्होंने बिचौला में डेरा डाल दिया है। *न्यू जर्सी निवासी श्री राम स्वरूप आर्य ने एक मिलियन की लागत से सुखराम इन्टर कालेज की स्थापना की।* अमेरिका के रोढ आइलैन्ड विश्वविद्यालय, किंग्स्टन में *गणित के इमेरिटस प्रोफ़ेसर डा. घासीराम वर्मा ने पिछले दो दशकों में राजस्थान में शिक्षा प्रसारण तथा समाज सेवा कार्यो के लिए चार करोड़ रुपयों से अधिक अनुदान दिया है। वे सभी हमारे सम्मान के पात्र हैं।*